|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 29. April |  |  |
| **Fest der heiligen Katharina von Siena,** |
| **Ordensfrau, Kirchenlehrerin, Schutzpatronin Europas** |
| Lesung:1 Joh 1,5-2,2; Evangelium: Mt 11,25-30 |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 547 | Du, Herr, hast sie für dich erwählt |
|  |  | Alternativmelodie: GL 144 |
|  | GL 542, 1+5 | Ihr Freunde Gottes |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 134 | Herr, erbarme dich unser |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 172 | Gott in der Höh |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 103,1-4.8-9.13-14.17 |  |
|  | Kehrvers: GL 57, 1 | Meine Seele preise den Herrn |
|  | Psalmlied: GL 392, 1+4+5 | Lobe den Herren |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 174, 6 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Sei gepriesen, Vater, Herr des Himmels und der Erde;* |
|  | *du hast die Geheimnisse des Reiches den Unmündigen offenbart.* |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 369, 1+2 | O Herz des Königs aller Welt |
|  | GL 364, 1+5 | Schönster, Herr Jesu |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 200 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 331, 1-3 | Ist das der Leib |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 213, 1-3! | O heil’ge Seelenspeise |
|  | GL 456, 1+4 | Herr, du bist mein Leben |
|  | GL 377, 1+2 | O Jesu, all mein Leben bist du |
|  | GL 755, 1-3 | Halleluja! Auferstanden |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 777, 1+4 | Kommt, lasst uns aus der Seele Grund |

*.*